खुशबू तो बचा ली जाए

(ग़ज़लें)

हिन्दी अकादमी, दिल्ली के प्रकाशन-सौजन्य से

जगतराम एण्ड सन्स
रोशन बाजार गांधी नगर दिल्ली-110031

खुशबू तो बचा ली जाए

लक्ष्मी शकर वाजपेयी

लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

प्रकाशक
जगतराम एण्ड संस
IX/221, मेन बाज़ार, गांधीनगर
दिल्ली-110031

प्रथम संस्करण
1994

आवरण
इमरोज़

मूल्य
चालीस रुपये

शब्द संयोजन
अजय प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

मुद्रक
राधा प्रेस
गांधीनगर, दिल्ली 110031

KHUSHABU TO BACHA LI JAAYE
by Laxmi Shanker Vajpayee
Price Rs. 40.00

पूजनीया माँ
बड़े भैया डॉ० कृष्ण शकर
एव
डॉ० हर शकर
को सादर

आभार

- कानपुर के कविवर श्री सुमन दुबे, श्री सारग त्रिपाठी एव श्री धर्मपाल अवस्थी का जिन्होंने मेरे 'कवि' के बचपन को प्यार, दुलार एव प्रोत्साहन दिया।
- सभी कवि मित्रों शुभचिन्तको एव जाने-अनजाने प्रशसकों का जिनका स्नेह मेरा हौसला बढाता रहा है।
- कवि मित्र भाई ज़हीर कुरेशी का जो कई वर्षो से काव्य-सग्रह के लिए टोकाटाकी करते आ रहे है।
- श्री अनिल कपूर, मगल नसीम एव श्री राजकुमार गौतम का, जिनका श्रम इस सग्रह के साथ जुड़ा है।
- ममता, गीतिका एव गीत का जो नयी रचनाओ पर सबसे पहली प्रतिक्रिया देते हैं।

नई गजल—नया लहजा

लक्ष्मी शकर वाजपेयी से मै पहली बार आकाशवाणी केन्द्र, ग्वालियर मे मिला। फिर मुलाकातो का सिलसिला बढ़ा बढ़ता रहा। इन मुलाकातों के दरम्यान आकाशवाणी के अधिकारी और आकाशवाणी के कार्यक्रमों में भाग लेने वाले कलाकारो जैसा कोई सबध न था। एक ऐसा सबध ऐसा रिश्ता था, जिसे अहसास के रिश्ते का नाम दिया जा सकता है और अहसास का रिश्ता बहुत जल्दी कायम नही होता। धीरे-धीरे जज़्बो की आवाज़ बनता है। जब वो जज़्बों की आवाज़ बन जाता हे तो दायमी हो जाता है, अमर हो जाता है क्योंकि 'आवाज़' कभी मरती नही, फना नही होती।

आकाशवाणी में छोटे-बडे अधिकारी आते रहते हैं बदलते रहते है। 20-25 वर्षों की अवधि मे इन अधिकारियो से मेरा कोई व्यक्तिगत सबध नही रहा। रिश्ता रहा माइक से। बुलाया गया चला गया। रचना-पाठ के बाद माइक छोड़ दिया। आकाशवाणी के गिने-चुने अधिकारियो से मेरा परिचय मात्र हुआ उसके बाद मै उन्हे भूल गया। इनमे सिर्फ़ लक्ष्मी शकर वाजपेयी एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनसे मै मिला मिलता रहा और उन्होने मुझे और मैने उन्हें अपने परिवार के सदस्यो में हमेशा-हमेशा के लिए शामिल कर लिया।

लक्ष्मी शकर वाजपेयी ने किसी मुलाकात मे मुझ पर यह ज़ाहिर नही होने दिया कि वे कवि भी है। उनके रहन-सहन, शाइस्तगी गुफ्तगू के अदाज़ और ख़ास तौर पर उनकी आँखों में डूबती-उभरती सोचो ने मुझे यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि इस सीधे-सादे, पुरखुलूस नौजवान में कही-न-कही कोई बड़ा कलाकार छुपा हुआ है। मे सोचता रहा कि काश, इन दफ्तरी फ़ाइलों मे उलझा हुआ और आकाशवाणी मे अपना नाम शामिल करवाने वाले कलाकारों से घिरा हुआ यह आदमी स्वय भी कलाकार होता।

मेरा यह स्वप्न उस दिन साकार हुआ जब एक मुशायरे मे सचालक ने लक्ष्मी शकर वाजपेयी को रचना-पाठ के लिए आमत्रित किया। लक्ष्मी शकर ने दिल के तारों को झनझना देने वाले धीमे-धीमे दिलकश तरन्नुम मे सोई हुई

ज़हनी कैफ़ियतों को जगाने वाली गज़ल पढ़ी

पाँव जिन रास्तो पर जले
हम हमेशा उन्ही पर चले

मुझे वो ख़ुशी मिल गई, जिसका मुझे मुद्दत से इन्तज़ार था। हैरत इस बात पर हुई कि उनकी गज़ल मे गज़ल का पूरा लहजा था।

गज़ल को गज़ल का मिज़ाज और लहजा देना बहुत मुश्किल काम है। यह काम, यह हुनर, बरसों की रात-दिन की मेहनत के बाद आता है। हज़ारो बदनसीब तो ऐसे है जो ज़िन्दगी-भर की कोशिश और मेहनत के बावजूद, गज़ल की 'रूह' तक तो क्या उसकी परछाई तक भी नही पहुँच पाते।

गज़ल की रफ़्तार को काबू म करने का फ़न एक तेज़-तर्रार, बेलगाम घोड़े को काबू मे करने का फ़न हे। एक ऐसे हिरन को परचाने का फन हे जो पास आता है ओर फिर चोकड़ी भरता हुआ दूर बहुत दूर निकल जाता है।

गज़ल एक ऐसी विधा है, जिसम हज़ारो बखेड़े हज़ारो झमेले है।

सबसे पहली और सख़्त मज़िल बहर (मीटर) के चुनाव की है। बहरें सेकडों हैं फिर इन बहरो की अनेक शाखाएँ है। इन शाखाओं के अलग-अलग अग हैं। इन तमाम बारीकियो और नज़ाकतो को ध्यान मे रखकर बहर का चुनाव किया जाए, तो दाँतो पसीना आ जाता है। इसके बाद जानलेवा चीज़ है—काफिया। काफ़िये के बाद नाम पूछती है रदीफ। इन तीनो पर अधिकार पा लेने के बाद, यह उलझन होती है कि 'मौज़ू' (विषयवस्तु) को किस तरह उजागर किया जाए। केसे शब्द दिए जाएँ। कैसा माहौल दिया जाए कि इनमे नयापन ज़ोर ओर असर की खूबी पैदा हो सके।

गज़लकार को, अपनी मजिल तक, यानी सिर्फ़ एक गज़ल के 'मतले' से लेकर पाँच या सात शेर कहने तक, फ़िक्र के काँटादार ओर पथरीले रास्तों का सफ़र तय करना पडता ह। तब जाकर, एक या दो शेर एसे हो जाते हे, जिन्हे शेर कहा जा सकता ह। अगर गज़लकार गजल के फन की बुनियादी पाबदिया के साथ पूरी गज़ल मे एक शेर भी अच्छा कह पाए, तो उसे कामयाब कोशिश कहा जा सकता है।

लक्ष्मी शकर वाजपेयी इस कोशिश में कामयाब नज़र आते है क्योकि बकौल उनके, शायरी न तो उनका शोक है न पेशा ही। शायरी उनका मज़हब

है। वो कहते हैं

ये मिरा शौक है, न पेशा है
शायरी की है बदगी की तरह

उनमें शेर कहने की सलाहियत खुदादाद है। उनके मिज़ाज को गज़ल के मिज़ाज से एक ख़ास बावस्तगी है। इसलिए उनकी रचनाओं में, विशेषकर 'गज़ल' में 'ख़याल' अपने साथ वहर भी लाता है, काफ़िया भी लाता है और रदीफ़ खुद-ब-खुद बहर और काफ़ियों से समन्वित हो जाती है, और वे ज़िन्दगी के जिस जज़्बे, समाज के जिस दर्द को चाहते हैं—गज़ल के शेर में ढाल देते हैं। या ख़याल खुद-ब-खुद गीत की लहरों और गज़ल की बहरों में रक्स करने लगता है।

उनकी भाषा न हिन्दी है न उर्दू है—हिन्दुस्तान में आम तौर पर बोली जाने वाली ज़बान है, जो सबकी समझ में आसानी से आ जाती है। सबके दिल की बात होती है, इसलिए सबके दिल में उतर जाती है। गज़लों की तरह उनके गीतों का लहजा भी पुरअसर है और महावरा-दिलकश है।

लक्ष्मी शकर ने अपने कविता-सग्रह को बड़ा महकता हुआ नाम दिया है—खुशबू तो बचा ली जाए।

इस नाम में समाज के बद से बदतर होते हुए माहोल का मरसिया भी है इस सड़े-गले माहौल की चद नाज़ुक, खूबसूरत और बेशकीमत चीज़ो को बचा लेने का मशवरा भी है। यही मशवरा लक्ष्मी शकर का दर्द भी है और उनके दर्द की खुशबू भी है

पूरे गुलशन का चलन चाहे बिगड़ जाए मगर
बदचलन होने से खुशबू तो बचा ली जाए

आज का समाज इतना अभावग्रस्त है कि अगर उसे थोड़ी-सी चीज़ भी मिल जाए, तो वो उसे बहुत समझता है उसी पर सतोष कर लेता है। लोगो की इस गिरी हुई ज़हनियत को उन्होने किस ऊँचाई से शेर का लहजा दिया है

सिर्फ़ दो-चार बूँदें गिरी
लोग बरसात कहते रहे

लक्ष्मी शकर के शेर कहने की एक निराली अदा ये भी है कि वो धीरे-धीरे अहसास के दरवाज़े पर दस्तक देते हैं और जब यह दरवाज़ा खुलता है तो मानी की नग्मगी और लफ़्ज़ों की खुशबू बिखर जाती है

मुद्दतों के बाद जब खुद से मिले
देर तक चलते रहे शिकवे-गिले

कहीं-कहीं लक्ष्मी शकर का लहजा बहुत धारदार और तीखा हो जाता है। इस लहजे में वो समाज की उस नौजवान पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमे वो खुद भी शामिल है

भूल जा खुद अपने कदमों, मज़िलें पाने के ख़्वाब
चाहिए मज़िल अगर तो ढूँढ़ ले बैसाखियाँ

× × ×

बद पड़े हैं कितनी आँखों के सपने
कुछ सरमायादारों के तहख़ानो में

उन्होने कई ग़ज़लें बड़ी मुश्किल रदीफ़ों में कही हैं और उन रदीफ़ों का निर्वाह भी बड़े सुन्दर ढग से किया है

डूबा हुआ है दर्द में हर एक आदमी
हर आँख आँसुओ मे नहाई है कुछ करो

× × ×

कोई सुनता न हो जहाँ यारो
क्या शिकायत करे वहाँ, यारो
वो हैं हमदर्द, मेरे अपने हैं
टूट जाए न ये गुमा यारो
रोशनी क्या, अभी तो मीलो तक
रोशनी के नही निशा यारो

लक्ष्मी शकर सिर्फ़ समाज की बेदर्दी पर आँसू नही बहाते वो अपने अन्दर इतनी हिम्मत और हौसला भी रखते है कि समाजी बुराइयों से लोहा लेकर उन्हे दूर कर सकें, बदहाली को खुशहाली मे बदल सके

हमसे डरती हैं नाकामियाँ
इतने मज़बूत हैं हौसले

× × ×

नाउमीदी कभी उम्मीद मे ढल सकती है
किसी रस्ते से नई राह निकल सकती है

× × ×

जिस पे ओरो के मुँह बन्द थे
हम वही बात कहते रहे

लक्ष्मी शकर सीधे-सच्चे आदमी हैं। पैनी नज़र रखने वाले कलाकार है। इसलिए हर बात की गहराई और सच्चाई पर उनकी नज़र है

आपकी झूठी तसल्ली से, भला क्या होगा
यूँ न भर पाएँगे ये ज़ख़्म बहुत गहरे हैं

जैसा अछूता माहौल उनकी गज़लो का है, वैसा ही नुकीला अदाज़ उनके गीतों का भी है। अपने गीतों में कौमी एकता के जज़्बों को उन्होने बड़ी ख़ूबसूरती से उभारा है।

उनका सलीका उनकी ज़िन्दगी का सबसे कीमती सरमाया है—जो उनकी शायरी मे बस गया है।

वे अपनी रचनाएँ सदा स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं को प्रकाशन के लिए देते है प्रबुद्ध श्रोताओं को ही अपनी रचनाएँ सुनाते हैं, अच्छे लोगों में बैठते-उठते हैं। ये वो ख़ूबियाँ है जो गिने-चुने फ़नकारों मे ही पाई जाती हैं।

इस कविता-सग्रह से उनका जो स्वप्न जुड़ा हुआ है, मुझे यकीन है कि साकार ज़रूर होगा।

डा० अख़्तर नज़्मी
ग्वालियर

गज़ल—साँझा सस्कृति की सवाहिका

गज़ल आजकल चर्चा के केन्द्र मे हे। वह नयी पीढ़ी की लोकप्रिय विधा हे। गत दशको मे हिन्दी कविता स्वच्छन्दता की ओर झुकती गई है। रागात्मकता का स्थान बौद्धिकता ने, भावप्रवणता का विचारप्रधानता ने, माधुर्य जिसमे सगीतात्मकता भी सम्मिलित हे, का स्थान रूक्षता ने ले लिया है। बीच मे छन्द की वापसी का बड़ा शोर मचा परन्तु छन्द की वापसी कही दिखाई नही दी। इसका एक कारण शार्ट-कट की सस्कृति भी हो सकता है। लोग आज लिखना शुरू कर कल प्रसिद्ध होना चाहते हें। उनके पास इतना समय ही नही हे कि वे छन्द के अनुशासन मे से गुज़रने का कष्ट उठाएँ। जिस युग मे साधना से अधिक साधनो का महत्त्व हो, उसमें जोड़-तोड अफरा-तफरी गुटबदी आदि के अतिरिक्त ओर पनप भी क्या सकता है।

कहा जाता हे कि कविता के सामने सकट उपस्थित हो गया है। प्रश्न यह है कि कौन-सी कविता के सामने? जो कवि तथाकथित बौद्धिक वर्ग, मित्रमडली या मात्र आत्मपरितोष के लिए कविताएँ लिखते है उनके सामने सकट न पहले था न अब है। समाज काव्योन्मुख हो अथवा काव्यविमुख हो, उन्हें क्या अन्तर पडता है? जो कवि वाहवाही लूटने और पैसा कमाने के लिए कवितानुमा कुछ लिखते है उनकी दूकान भी अच्छी चल रही है। सकट है तो उनके लिए जो कविता को सप्रेषण का, सुधी समाज से जुडने का माध्यम मानते हें। जो कवित्व की मान-मर्यादा बनाए रखकर जनमानस लोकचेतना में उतरना चाहते है। एक पूरी परम्परा रही हे ऐसे कविया की—तुलसीदास, कबीर से लेकर मेथिलीशरण दिनकर, बच्चन तक की। उर्दू में तो ख़ैर यह परम्परा बहुत ही पुख़्ता हे। मीर, गालिब फ़ेज आदि महान कवि भी हैं और लोकप्रिय कवि भी।

हिन्दी में ही कुछ ऐसा रिवाज चला है कि लोकप्रिय कवि की साहित्यिकता के सामने प्रश्नचिह्न लगा दिया जाता है और अपाठ्य कवि की रचनाएँ आदर्श कविता के रूप में पाठ्यक्रमों में लगा दी जाती हें।

बहरहाल छन्द की वापसी बीच सफ़र मे कही रह गयी होगी, परन्तु एक काफ़ी बड़ी सख्या में कवियो ने जनमानस से एकाकार होने के लिए कुछ पारम्परिक विधाओं को अपनाया है जिनमें सबसे प्रमुख है गज़ल, उसके बाद दोहे कुण्डलियाँ आदि। मनोरजक बात यह है कि जब हिन्दी में सॉनेट लिखे गये, 'हाइकू' कविताएँ रची गई तब विद्वानों की बाछें खिल गयी और जब हिन्दी की सहोदरा उर्दू की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा गज़ल का प्रचलन हिन्दी मे बढ़ा तो विद्वानों की त्योरी पर शिकनें पड़ने लगी उन्हे गज़ल मे विलासिता की बू आने लगी।

वास्तविकता तो यह है कि आज जिस साँझा सस्कृति की बात हो रही है, गज़ल उसकी एक बहुत बड़ी सवाहिका बन सकती हे। आज उर्दू ओर हिन्दी में जितना आदान-प्रदान हो रहा है, वह आपसी समझ के लिए भी बड़ा कारगर हे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि जब एक भाषा की विधा दूसरी भाषा में जाती हे तब उसके रूप-रग में, उस भाषा की प्रकृति के अनुसार कुछ रद्दोबदल होना अनिवार्य है। उर्दू में जब गीत या दोहे लिखे जाते हैं या हिन्दी सदृश कविता तब उर्दू के मिज़ाज के मुताबिक कुछ शब्दों के उच्चारण और कुछ छन्दो के प्रवाह मे अन्तर आ जाना स्वाभाविक है। इसी प्रकार यह आशा या अपेक्षा करना कि हिन्दी में लिखी जाने वाली गज़ल में उर्दू गज़ल के तमाम तकाज़ों का निर्वाह हो सकेगा एक अनुपयोगी विवाद मे पड़ना हे। पर इसका यह अर्थ भी नही हे कि उर्दू गज़ल की जो मूलभूत शर्तें आर ख़ास पहचानें हे, उन्हें नज़रअन्दाज़ किया जाए। गज़लियत क्या है यह समझना, समझाना ठीक उतना ही दुश्वार है जिस प्रकार गीतात्मकता या कवित्व मात्र को गणित के फ़ार्मूले की तरह परिभाषित करना। हाँ इतना अवश्य कहा जा सकता है कि गज़लियत का कुछ सबध माधुर्य से अवश्य हे जिसे परिभाषित नही महसूस किया जा सकता है कान और हृदय के समवेत प्रयोग द्वारा। इसके बाद, गज़ल की कुछ मूलभूत ख़ूबियाँ और हैं—सहजता, सवेदनशीलता सुनते ही दिल पर असर करने की ताकत और उद्धरणशीलता। सामाजिक सरोकार भी उसका एक ख़ास गुण है।

मुझे खुशी है कि लक्ष्मी शकर वाजपेयी ने गज़ल की इन विशेषताओं को पहचाना ही नही आत्मसात करने का प्रयास भी किया है। वाजपेयी जी की गज़लों मे गज़ल की मूलभूत प्रकृति का सराहनीय निर्वाह हुआ है।

उनकी गज़लें रूमानी दायरे मे कैद न रहकर आज की विडम्बनाओं, विवशताओं और वेदनाओ से सीधी जुड़ी हैं। वाजपेयी जी की गजलों की एक उल्लेखनीय विशेषता तो यही है कि उनकी ज्यादातर गज़लो का मतला ही बड़ा सशक्त है। कुछ मिसाले पेश हैं

वो दर्द, वो बदहाली के मंज़र नही बदले
बस्ती में अँधेरों से भरे घर नही बदले

× × ×

दर्द जब बेज़ुबान होता है
कोई शोला जवान होता है

× × ×

अपने ही हाथों मे पतवार सँभाली जाए
तब तो मुमकिन है कि ये नाव बचा ली जाए

× × ×

जिनके माथे पे कामयाबियो के सेहरे हैं
ऐसे लोगो में कई ख़ौफनाक चेहरे हैं

× × ×

जो उसूलों से परेशान रहे
ज़िन्दगी भर लहूलुहान रहे

वाजपेयी जी के ज़्यादातर शेर, 'राख नही हैं राख ढके अगारे हैं। उनकी गज़लो मे उभरने वाले बुझे-बुझे चेहरों पर भी अक्सर तमतमाहट उभर आती है। वह चुनौती-भरे स्वर में कहते हैं

बाज़ आओ कि जोखिमों से भरा
सब का इम्तिहान होता है

× × ×

पूरे गुलशन का चलन चाहे बिगड़ जाए मगर
बदचलन होने से खुशबू तो बचा ली जाए

यहाँ 'चलन' और 'बदचलन' का कुशल प्रयोग उल्लेखनीय बन पड़ा है। कविता कविधर्मी ही नही उसकी जीवनशैली भी होती है। लक्ष्मी शकर

जी की ग़ज़लों में जो शायराना तेवर उभरकर आया है वह प्रभावित करता है

गमों से चूर होकर भी लगाऊँ कहकहे नकली
हमे ऐसी भी अब ज़िन्दादिली अच्छी नहीं लगती

× × ×

ये मिरा शौक है न पेशा है
शायरी की है बन्दगी की तरह

वाजपेयी जी की ग़ज़लों में हिन्दी कविता की ख़ुशबू भी काफ़ी हद तक समाई हुई है

कल यहाँ बच्चों की किलकारियो का गुजन था
आज बस्ती में जहाँ फौजियो के बूट गए

× × ×

जै जै कार बोलेंगे
पाले हुए तोते है

× × ×

वक्त की धार को खुद मोड के चलने वाले
चाहिए आज कुछ इतिहास बदलने वाले

उद्धरणशीलता की दृष्टि से यह शेर भी 'काबिले-ज़िक्र' है—

सारे हालात वही ज्यों के त्यों
आप कहते हैं कुछ नया लिखिए

प्रस्तुत सग्रह मे ग़ज़लों के साथ कुछ गीत भी जोड़ दिए गए है। ये गीत एक गीतकार के रूप में वाजपेयी जी की प्रतिभा के साक्षी है। गीतों मे लयात्मकता भी है और मर्मस्पर्शिता भी। कुछ पक्तियाँ दृष्टव्य हैं

कभी-कभी तो सब कुछ टूटा-टूटा-सा लगता है
जीने का नाटक भी कितना झूठा-सा लगता है
मेरी परछाई भी मेरी हँसी उड़ाती है

मुझे पूरा विश्वास है कि वाजपेयी जी की दीर्घकालीन काव्यसाधना की उपलब्धि, इस प्रथम काव्य-सग्रह का हिन्दी जगत् में उत्साहपूर्वक स्वागत होगा। मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ उनके साथ है।

बाल स्वरूप राही
माडल टाउन, दिल्ली

अनुक्रम

गज़ले / 19
वो दर्द, वो बदहाली के मंज़र नही बदले / 21
दर्द जब बेज़ुबान होता है / 22
पाँव जिन रास्तों पर जले / 23
कभी न बरसे बादल, रेगिस्तानों में / 24
खुद भूल रहे अपनी जो राह देखिए / 25
हर ओर घुटन गम की सियाही है / 26
कोई सुनता न हो जहाँ यारो / 27
रौशन हो हर मकाम दीवाली की रात है / 28
नाउमीदी कभी उम्मीद में ढल सकती है / 29
रात को रात कहते रहे / 30
अपने ही हाथो मे पतवार सँभाली जाए / 31
जिनके माथे पे कामयाबियों के सेहरे हैं / 32
जो भटका दे, हमें वो रोशनी अच्छी नही लगती / 33
कब तलक उनके बयानो पे एतबार करे / 34
ज़िन्दगी क्यूँ है तिश्नगी की तरह / 35
लादे हुए हैं दर्द बेशुमार हम सभी / 36
लोग ज़िन्दा हैं, न जाने कब से इस उम्मीद पर / 37
हादसे इतने हुए, अपनी ज़िन्दगानी मे / 38
वो जो मेरा साया है आज तक पराया है / 39
मेरे कुछ अपने ही, एहसास मुझे लूट गए / 40
जो उसूलों से परेशान रहे / 41

इतने दर्द ढोते हैं / 42
वक्त की धार को खुद मोड़ के चलने वाले / 43
जिस्म जल जाएँगे चिताओं में / 44
ये रात है, न सहर है, अजीब मंज़र है / 45
ये क्या सफ़र है जिसमें कोई हमसफ़र नही / 46
उनका फ़रमान है ऐसा लिखिए / 47
है अमन-चैन अभी वक्त की दुआओं से / 48
जितनी कसमें उठायी गयी / 49
वक्त के साथ कई ज़ख़्म तो भर जाएँगे / 50
पिंजरे में कैद पंछी ये सोचता रहा / 51
ख़ूब नारे उछाले गए / 52
कितनी जल्दी थी पहुँचने की उसे घर यारो / 53
लोग अपनी खिड़कियों से झाँकते भर रह गए / 54
काश ऐसा कभी हो सके / 55
कुल मिलाकर यही फ़लसफ़ा है / 56
कुछ शेर / 57
कुछ गीत / 61
लोग कहे हैं शिशिर शीत से तन में हो ठिठुरन / 63
याद तुम्हारी अक्सर आकर मुझको तड़पाती है / 64
सच-सच बतलाना ओ सूरज अपने मन की बात / 65
चाहे हो बाबर की मस्जिद, चाहे मंदिर राम का / 66
माँ की ममता फूल की ख़ुशबू, बच्चे की मुस्कान का / 68
रोज़ नयी चिन्ताएँ लेकर, आता है अख़बार / 70
कभी-कभी जीवन में ऐसे भी कुछ क्षण आए / 72

ग़ज़लें…

वो दर्द, वो बदहाली के मंज़र नही बदले
बस्ती में अँधेरो से भरे घर नही बदले

हमने तो बहारो का महज़ जिक्र सुना है
इस गॉव से तो आज भी पतझर नही बदले

खण्डहर पे इमारत तो नई हमने खड़ी की
पर भूल ये की नीव के पत्थर नही बदले

बदले है महज कातिल और उनके मुखौटे
वो कत्ल के अदाज, वो ख़जर नही बदले

उस शख़्स की तलाश मुझे आज तलक है
जो शाह के दरबार में जाकर नही बदले

कहते है लोग हमसे बदल जाओ ऐ शायर
पर हमने शायरी के, ये तेवर नही बदले

दर्द जब बेजुबान होता है
कोई शोला जवान होता है

आग बस्ती में सुलगती हो कही
ख़ौफ मे हर मकान होता है

बाज़ आओ कि जोखिमो से भरा
सब्र का इम्तिहान होता है

ज्वारभाटे मे कौन बचता है
हर लहर पर उफान होता है

जुगनुओं की चमक से लोगों को
रोशनी का गुमान होता हे

वायदे उनके ख़ूबसूरत है
दिल को कम इत्मीनान होता है

पॉव जिन रास्तो पर जले
हम हमेशा उन्ही पर चले

जितने नज़दीक आते गए
उतने बढ़ते गए फासले

हमसे डरती है नाकामियॉ
इतने मजबूत है हौसले

धूप की शक्ल में तीरगी
देखिए और कब तक छले

रोज उठती है इक टीस सी
शाम जब धीरे - धीरे ढले

कभी न बरसे बादल, रेगिस्तानों में
बरसे भी तो हरे-भरे मैदानों मे

यूँ खुद को सब कहते है इसान मगर
मिलते हैं इसान कहाँ इसानों मे

महज़ शमा के आसपास मॅडराते है
मिटने वाले कम ही है परवानों मे

कैद पड़े हैं कितनी ऑखो के सपने
कुछ सरमायादारो के तहख़ानो मे

कितने ही बेगाने निकले अपनो मे
कितने ही अपने निकले बेगानों मे

सब कुछ सहकर भी ईमान बचाये है
हम भी शामिल है ऐसे नादानो मे

ये किसके कदमो की आहट आती है
कौन गुजरता है दिल के वीरानो में

खुद भूल रहे अपनी जो राह देखिए
वो हमको कह रहे है गुमराह देखिए

कुछ इस तरह चमन मे खिलाए गए है गुल
होता है चमन किस तरह तबाह देखिए

अब तक डुबो चुका जो कई बार कश्तियॉ
कहता है पार करने को मल्लाह देखिए

जेसे वो मुद्दई थे औ' जैसा था मुकदमा
वैसे ही उन्हें मिल गए गवाह देखिए

वो दावेदार बन रहे है रोशनी के आज
दामन थे जिनके कल तलक सियाह देखिए

रोका उन्होने लाख नही बन्द की ज़ुबा
करता रहा गुनाह पे गुनाह देखिए

शायर पे कल को कोई भी इल्जाम फिर न दे
पहले से कर रहा हूँ मै आगाह देखिए

हर ओर घुटन गम की सियाही है, कुछ करो
फैली हुई वतन पे तबाही है, कुछ करो

डूबा हुआ है दर्द मे हर एक आदमी
हर ऑख ऑसुओ मे नहाई है, कुछ करो

मुद्दत से सह रहे हो वही गम वही घुटन
ओ सब्र करने वालो दुहाई है, कुछ करो

कुछ आग सुलगती रहे, उठता रहे धुऑ
माहौल पे खामोशी-सी छाई है, कुछ करो

ओ नौजवानो, तुम पे वतन की है निगाहे
क्यूँ नीद तुम्हें ऐसे में आई है, कुछ करो

कोई सुनता न हो जहाँ यारो
क्या शिकायत करें वहाँ यारो

कुछ तबाही पे मेरी गौर करें
इतनी फुर्सत उन्हे कहाँ यारो

कैसे देखेंगे वो जमी की तरफ
अब है नजरों मे आस्मा यारो

वो है हमदर्द, मेरे अपने है
टूट जाए न ये गुमा यारो

जख़्म हर फूल के दामन मे है
कैसे महकेगा गुलसिताँ यारो

सोई चिनगारियाँ जगाने को
फिर मचलने लगी जुबा यारो

रोशनी क्या, अभी तो मीलो तक
रोशनी के नही निशा यारो

रोशन हो हर मकाम, दिवाली की रात है
हो खूब धूमधाम, दिवाली की रात है

लिख दो ज़रा-सी रोशनी अपने मकान की
उस झोपड़ी के नाम, दिवाली की रात है

हर शख़्स का हक है कि उजाले मे जिए वो
पहुँचाओ ये पैगाम, दिवाली की रात है

कुछ एक धुऑ बॉटते चिराग न कर दे
हर दीप को बदनाम, दिवाली की रात है

ॲधियारे मे गमगीन-सा, कुछ सोचता हुआ
वो कौन है गुमनाम, दिवाली की रात है

नाउमीदी कभी उम्मीद में ढल सकती है
किसी रस्ते से नई राह निकल सकती है

जो शमा जलती रही सिर्फ धुआँ दे-देकर
वो शमा रोशनी देकर भी तो जल सकती है

आज दुश्वार इन्किलाब का रस्ता हो भले
कल को बस्ती ये उसी राह पे चल सकती है

आज गाफिल है हुकूमत अगर खुमारी में
कल को पछतावे में वो हाथ भी मल सकती है

वो जो गुमराह है, भटकी है या कि सोई है
वो जवानी कभी करवट भी बदल सकती है

दर्द बस्ती का लिए फिरता हूँ इस कोशिश में
कोई नज़र तो ख़रीदार निकल सकती है

हर बुझी साँस जो सहती है घुटन मुद्दत से
कल सरेआम बगावत पे मचल सकती है

रात को रात कहते रहे
हम सही बात कहते रहे

सिर्फ दो-चार बूँदें गिरी
लोग बरसात कहते रहे

ढालकर अपनी गजलो मे हम
सबके जज़्बात कहते रहे

मातमी शक्ल में भीड़ थी
लोग बारात कहते रहे

जिनपे औरो के मुँह बन्द थे
हम वही बात कहते रहे

अपने ही हाथों में, पतवार सँभाली जाए
तब तो मुमकिन है कि ये नाव बचा ली जाए

आज के दौर में, ये शर्त है जीने के लिए
लाश ईमान की काँधे पे उठा ली जाए

कुछ लुटेरों ने भी पहना है फरिश्तो का लिबास
इनके बारे में गलतफहमी न पाली जाए

पूरे गुलशन का चलन चाहे बिगड़ जाए मगर
बदचलन होने से ख़ुशबू तो बचा ली जाए

ये शमा कैसी है रह-रह के धुआँ देती है
काश ये बुझने से पहले ही बचा ली जाए

इन धुआँती-सी मशालों को जलाने के लिए
राख के ढेर से कुछ आग निकाली जाए

लोग ऐसे भी कई जीते हैं इस बस्ती में
जैसे मजबूरी में इक रस्म निभा ली जाए

जिनके माथे पे कामयाबियो के सेहरे हैं
ऐसे लोगों मे, कई ख़ोफनाक चेहरे हैं

जिनके दरबार में फरियाद सुनी जाती है
ये सुना जाता है वो लोग ज़रा बहरे हे

कैसे पहुँचेगा मेरा दर्द भला उनके करीब
उनके हर ओर ख़ुशबुओं के कड़े पहरे है

हमको मालूम नही उनकी हकीकत क्या है
वो जो दिखलाते है वो ख़्वाब तो सुनहरे है

आपकी झूठी तसल्ली से भला क्या होगा
यूँ न भर पाएँगे ये जख़्म बहुत गहरे हे

जो भटका दे, हमे वो रोशनी अच्छी नही लगती
जो देती हो तपन, वो चॉदनी अच्छी नही लगती

गमो से चूर होकर भी लगाऊॅ कहकहे नकली
हमे ऐसी भी अब जिन्दादिली अच्छी नही लगती

सहे जाते है मुर्दो की तरह हर जुल्म चुप रहकर
हमें उन बेबसों की बेबसी अच्छी नही लगती

जो सब कुछ देख सुनकर जानकर ख़ामोश रहते हैं
हमे उन बुज़दिलों की ख़ामुशी अच्छी नही लगती

बहुत अनमोल शै है जिन्दगी, ये मानता तो हूॅ
न जाने क्या हुआ है जिन्दगी अच्छी नही लगती

समूची जिन्दगी जिसकी रही हो दर्द में डूबी
तो हैरत क्या, उसे कोई खुशी अच्छी नही लगती

कब तलक उनके बयानों पे एतबार करें
कब तलक और रोशनी का इन्तज़ार करें

वायदे उनके न इस जन्म में पूरे होंगे
इससे अच्छा है कयामत का इन्तज़ार करें

कुछ तो दिखलाएँ शुरू करके नया कम से कम
हम ये कब कहते है उनसे कि चमत्कार करे

उनसे जब धीमे से कहते है, कहाँ सुनते है
क्यूँ न फिर चीख के हम दर्द का इजहार करें

जब यही तय हो कि मर जाना है बस घुट-घुट कर
क्यूँ न हम अपने को इस ज़ीस्त से बेजार करे

जिन्दगी क्यूँ है तिश्नगी की तरह
एक सूखी हुई नदी की तरह

ऐ खुदा तेरा शुक्रिया तूने
रोशनी दी है तीरगी की तरह

खुदकुशी क्यूँ भला करे कोई
ज़िन्दगी गर हो जिन्दगी की तरह

सभ्य होकर भी क्यूँ नही रहता
आदमी सभ्य आदमी की तरह

ये मिरा शौक है, न पेशा हे
शायरी की है बन्दिगी की तरह

जब भी तनहाई में बाते की है
खुद को पाया हे अजनबी की तरह

लादे हुए हे दर्द बेशुमार हम सभी
लगते हैं बेबसी के, इश्तहार हम सभी

मल्लाह ख़ास लोगों को उस पार ले गया
अब तक खड़े है धार के इस पार हम सभी

जिस हाल में पहुँचा हे चमन आज दोस्तो
हम हों कि आप हो, हैं गुनहगार हम सभी

अवतार ले के कोई यहाँ पर न आएगा
वो जिसका कर रहे है, इन्तज़ार हम सभी

लोग जिन्दा है, न जाने कब से इस उम्मीद पर
होने वाली है सहर, बस होने वाली है सहर

ख़ौफ मे रहते है हम सब जैसे इक जगल के बीच
क्या पता किस हादसे की कब मिले किसको ख़बर

सर छुपाए, अब कहाँ जाकर भला इसानियत
गाँवों में धीरे-धीरे जब लगा घुलने शहर

ये हकीकत है कि धोखा है नही मालूम है
दूर रेगिस्तान मे आया तो है पानी नजर

रास्ते के पेड़, पानी, धूप, मिट्टी औ' हवा
इनका मज़हब तो बताना, हो पता तुमको अगर

लादे हुए है दर्द बेशुमार हम सभी
लगते है बेबसी के, इश्तहार हम सभी

मल्लाह ख़ास लोगो को उस पार ले गया
अब तक खड़े है धार के इस पार हम सभी

जिस हाल मे पहुँचा है चमन आज दोस्तो
हम हों कि आप हो, हैं गुनहगार हम सभी

अवतार ले के कोई यहाँ पर न आएगा
वो जिसका कर रहे है, इन्तजार हम सभी

लोग जिन्दा है, न जाने कब से इस उम्मीद पर
होने वाली है सहर, बस होने वाली है सहर

ख़ौफ में रहते है हम सब जैसे इक जगल के बीच
क्या पता किस हादसे की कब मिले किसको ख़बर

सर छुपाए, अब कहॉ जाकर भला इसानियत
गॉवो में धीरे - धीरे जब लगा घुलने शहर

ये हकीकत है कि धोखा है नही मालूम है
दूर रेगिस्तान मे आया तो है पानी नजर

रास्ते के पेड़, पानी, धूप, मिट्टी औ' हवा
इनका मजहब तो बताना, हो पता तुमको अगर

हादसे इतने हुए, अपनी जिन्दगानी मे
ढालना चाहूँ तो ढल जाएँ इक कहानी में

हम भी ख़ामोश रहे, वो भी चुप रहे लेकिन
बाते क्या-क्या न हुई, अपनी बेज़ुबानी में

अब न दूल्हे को दोष दीजिए न शादी को
आप भी साथ थे बारात की अगवानी मे

कौन ले जाए मेरा दर्द शहशाहो तक
जिनको भेजा था वो सोये है राजधानी मे

ये चमन, माली की जागीर नही है लोगो
लीजिए आप इसे अपनी निगहबानी मे

वो जो मेरा साया है
आज तक पराया है

धूप है, अँधेरों की
रोशनी का साया है

हमने जो भी खोया है
जिन्दगी ने पाया है

हँस के जिन्दगी जीना
दर्द ने सिखाया है

आदमी न इसको कहो
कहो कि 'दो पाया' है

मेरे कुछ अपने ही, एहसास मुझे लूट गए
वो घरोंदे जो बनाए थे कभी टूट गए

वो हसी ख़्वाब, तसव्वुर, वो खुशनुमा लमहे
तेज रफ्तार जिन्दगी मे कही छूट गए

कितने सपनो को सजाकर सफर पे निकले थे
वक्त के चन्द थपेड़ों में लोग टूट गए

फायदे भर के लिए रिश्ते बनाने वाले
जब कभी घाटे में आए तो हमसे रूठ गए

कल यहाँ बच्चो की, किलकारियो का गुजन था
आज बस्ती में जहाँ फौजियो के बूट गए

जो उसूलों से परेशान रहे
ज़िन्दगी भर लहूलुहान रहे

ज़ख़्म तो भर गए मगर उनके
एक मुद्दत तलक निशान रहे

जिसने खुशबू की इबारत लिख दी
लोग उस फूल से अनजान रहे

जो हुआ सबके सामने ही हुआ
क्यूँ मगर लोग बेज़ुबान रहे

ठोकरें खा के गिरे धरती पर
जिनकी नज़रों में आसमान रहे

खुद को कहते हैं चमन कुछ पौधे
इनसे हर फूल सावधान रहे

इतने दर्द ढोते हैं
ज़िन्दगी को रोते है

जै जे कार बोलेंगे
पाले हुए तोते है

आशियाना लुटता है
पहरेदार सोते है

नाखुदा अनाड़ी है
कश्तियॉ डुबोते है

लोग सूनी ऑखों मे
ख़्वाब क्यूॅ सॅजोते है

खुद तो भूखों मरते है
दुनिया भर को न्योते है

वक्त की धार को ख़ुद मोड़ के चलने वाले
चाहिए आज, कुछ इतिहास बदलने वाले

ऊँचे महलों से ज़रा झाँक के देखो तो सही
नीचे कुछ लोग है, फुटपाथों पे पलने वाले

ये जो लाचारी भरी, ऑखो मे ऑसू है भरे
कल यही ऑसू है अगारो में ढलने वाले

पूरे ढॉचे को बदलने की जरूरत होगी
अब ये हालात नही यूँ ही सँभलने वाले

पहले आते है भिखारी की तरह दर-दर पे
रात ही रात, शहशाहो मे ढलने वाले

इनके महलों की खिड़कियो पे फेकिए पत्थर
यूँ तो वाहर नही, ये लोग निकलने वाले

जिस्म जल जाएँगे चिताओं में
अक्स घुल जाएँगे फ़ज़ाओं मे

बन्द कमरों मे सिमटने वालो
आ के देखो खुली हवाओं में

एक सा आदमी है दुनिया मे
एक सा ख़ून हे शिराओ मे

ऐसा लगता है एटमी दुनिया
लौट जाएगी फिर गुफाओ में

रहनुमाई का कुछ सलीका भी
काश आ जाए रहनुमाओं मे

दर्द की ऑच मे तपा डालो
फिर असर देखना दुआओ मे

काश सब इतना सोच ले इक दिन
ख़त्म होगा सफर चिताओं मे

ये रात है, न सहर है, अजीब मजर है
जहाँ तलक है नज़र, धुध का समन्दर है

कल जो मीनार की मानिन्द नजर आता था
वक्त के हाथों, वो ढहता हुआ सा खण्डहर है

वो शख़्स जिसको मसीहा बना दिया तुमने
वो मसीहा नही है, रोशनी का तस्कर है

हज़ार जोड़ो से, पैवन्दो से जर्जर है मगर
हमारे जिस्म को ढँकने को वही चादर है

सबके दुख-दर्द मे चुपके से जो रो लेता है
वो इसी बस्ती का अनजान सा इक शायर है

अपने एहसास को कुछ नाम न दे पाए मगर
दिल में जो आज भी चुभता है एक नश्तर है

ये क्या सफर है जिसमे कोई हमसफर नही
मंज़िल की दूर-दूर तलक कुछ ख़बर नही

फैले है अभी दूर तलक रात के साये
कहते हैं सहर आप, मगर ये सहर नही

इतने बड़े शहर मे तू छोटा सा आदमी
चल और कही तेरी यहॉ पे गुजर नही

फरियाद पे फरियाद किये जा रहे है हम
इक आप है कि आप पे कोई असर नही

अब क्या बताएँ अपना ठिकाना है किस जगह
अपना हरेक घर है, मगर कोई घर नही

माना बहुत कठिन है, कड़ी धूप का सफर
गर चल पड़ें कदम तो कभी दोपहर नही

उनका फरमान है ऐसा लिखिए
हर अँधेरे को उजाला लिखिए

चन्द लमहों में ही मिट जाएगा
रेत पर उँगलियों से क्या लिखिए

सारी दुनिया को बदलने वाले
उन इरादो का क्या हुआ लिखिए

सारे हालात वही ज्यों के त्यो
आप कहते हैं कुछ नया लिखिए

मेरी नजरो में वो जो है सो है
आप लिखते है मसीहा, लिखिए

वक्त की इस किताब पर यारो
आप भी सफहा इक नया लिखिए

है अमन-चैन अभी वक्त की दुआओ से
इधर न आएँ गुज़ारिश है रहनुमाओं से

ओर तरकीब कोई कामयाब हो तो हो
ये मर्ज ठीक हो, शायद ही अब दवाओ से

गरम हवाएँ न झुलसा दें कही गुलशन को
अजीब ख़ौफ उभरने लगा फजाओं से

ये बात आज हमारी जुबा से निकली है
कहेगे लोग यही बात कल सभाओ से

खिड़कियाँ बन्द किए बेठे हो, जिनके डर से
घिरे रहोगे उन्ही चीख़ती सदाओं से

जितनी कसमें उठायी गयी
सब की सब झूठ पायी गयी

हर इमारत की बुनियाद में
कुछ सुरगें बिछायी गयी

नींद में ही जवानी रहे
लोरियाँ वो सुनायी गयी

हर कोई शौक से बिक गया
बोलियाँ जब लगायी गयी

एक कुर्सी खड़ी हो सके
कितनी लाशे गिरायी गयी

वक्त के साथ कई ज़ख़्म तो भर जाएँगे
वो जो नासूर बने हैं, वो किधर जाएँगे

हम अगर तोड़ दें उस पार के जगल का तिलिस्म
घर से फिर भाग के क्यूँ लोग उधर जाएँगे

कैसे मर-मर के जुटाया है एक इक तिनका
अब जो उजड़ेगा नशेमन तो किधर जाएँगे

हम अभी पिछली सदी पार भी नही आए
आप तो अगली सदी पार उतर जाएँगे

ले के आएँगे नई सुब्ह अपने लोहू से
वो जो अंधियारों से लड़ते हुए मर जाएँगे

ये शायरी का जुनू, रात-रात का जगना
ये मेरे साथ ही जाएँगे अगर जाएँगे

पिंजरे में कैद पछी ये सोचता रहा
उड़ना कहाँ-कहाँ था मगर क्या से क्या हुआ

वीरान जजीरे पे खड़ा देख रहा हूँ
हर ओर अन्तहीन समन्दर का सिलसिला

हम अपनी सफाई में कभी कुछ न कहेंगे
इक रोज वक्त खुद ही सुना देगा फैसला

ये बेतहाशा तेज़ भागते हुए से लोग
मंजिल कहाँ है इनकी इन्हें भी नही पता

लोगों की शक्ल मे ये महज जिस्म बचे हैं
रूहें तो जाने कब की हो चुकी है गुमशुदा

सब लोग अपने-अपने दायरों में कैद थे
मैं बावला-सा लोगों को देता रहा सदा

मै अपने कारवा से बिछुड़कर तमाम उम्र
जाने कहाँ-कहाँ पे भटकता हुआ फिरा

मै जिन्दगी को जीता रहा अपनी तरह से
ये सिर्फ मै ही जानता हूँ मुझको क्या मिला

रिश्तों को मत बना या मिटा खेल समझकर
रिश्ते बना तो आख़िरी दम तक उन्हे निभा

ख़ूब नारे उछाले गए
लोग बातो मे टाले गए

जो अँधेरो में पाले गए
दूर तक वो उजाले गए

जिसने ज्यादा उड़ाने भरी
उसके पर नोच डाले गए

जिनसे घर मे उजाले हुए
वो ही घर से निकाले गए

जिनके मन मे कोई चोर था
वो नियम से शिवाले गए

पॉव जितना चले उनसे भी
दूर पॉवों के छाले गए

इक जरा सी मुलाकात के
कितने मतलब निकाले गए

कौन साजिश मे शामिल हुए
किनके घर के निवाले गए

अब ये ताजा अँधेरे जियो
अब वो बासी उजाले गए

कितनी जल्दी थी पहुँचने की उसे घर यारो
पड़ा है अब जो सड़क पर, लहू से तर यारो

वही ख़ुलूस वही प्यार वही हमदर्दी
वो आज भी है, जमाने से बेख़बर यारो

अगर ये सोचो तो कितना अजीब लगता है
हैं आदमी से बड़े, पत्थरों के घर यारो

वो अपने आप बुलंदी पे नहीं पहुँचा है
उसको ले आई है, हालात की ठोकर यारो

अपनी मंजिल पे पहुँचने का जुनू है मुझमें
क्या बिगाड़ेंगे मेरा राह के पत्थर यारो

साँस भी अगली सदी में कोई लेगा कि नहीं
पूछता है ये हवाओं से खुद जहर यारो

क्या वो समझेगा कि मै किसलिए नहीं सोता
टोकता क्यूँ है मुझे चाँद रात-भर यारो

लोग अपनी खिड़कियो से झाँकते भर रह गए
सामने जलते हुए घर, राख होकर रह गए

ये भरम भर है कि हम पहले से ज्यादा सभ्य है
सच तो ये है सभ्यता के सिर्फ खण्डहर रह गए

शीशमहलों पर जवानी दिन ब दिन चढ़ती गयी
सहमे-सहमे, मुट्ठियों के बीच पत्थर रह गए

एक ढर्रे पर बँधा हर सिलसिला चलता रहा
हर बरस दीवार पर बदले कैलेण्डर रह गए

अब कहाँ झरनो सरीखे लोग आते हैं नज़र
पोखरों से लोग या खारे समन्दर रह गए

साथ मे ले लो उन्हें भी, उस सदी के वास्ते
जिनकी आँखों के सभी सपने बिखरकर रह गए

काश ऐसा कभी हो सके
आदमी आदमी हो सके

लोग मरते रहे, ताकि ये
जिन्दगी, जिन्दगी हो सके

इस तरह से बँटे हर किरन
सबके घर रोशनी हो सके

कुछ तो कर ऐसा ऐ चारागर
दर्द में कुछ कमी हो सके

उफ ये दहशतजदा बस्तियाँ
इनमें फिर जिन्दगी हो सके

कुल मिलाकर यही फलसफा है
कोई अच्छा है कोई बुरा है

रात-दिन हर तरफ हर कदम पर
हादसा हादसा हादसा है

फिर से लौटेंगे हम जगलों में
ये उसी दौर की इब्तिदा है

पहले भीतर सुलगता रहा है
वो जो खुद को जला कर मरा है

काश वो सामने आ के कहता
पीठ पीछे जो उसने कहा है

कोई गोतम नही है वो लेकिन
दर्द दुनिया का दिल मे भरा है

इन पड़ावो को मजिल न समझो
ओर आगे अभी रास्ता है

कुछ शेर....

जगल पहले गाँव बना, फिर कस्बा, उसके बाद नगर
महानगर तक आते-आते, फिर से जगल हो गया

वो शाख़ ही कटेगी कि जो सबसे अलग है
हिलती है ज़रा भी, तो बगावत सी लगे है

कोई सोचे तो हर इक लमहा है न्यूटन की तलाश
वर्ना इक उम्र भी सिगरेट का धुआँ है यारो

मै सबको छोड़ बहुत दूर निकल सकता था
मगर ये ज़िद थी मेरी, साथ चलूँगा सबके

जैसे साइस ने ढाली है मशीनें लाखों
इक मोहब्बत से भरा दिल भी बनाया जाए

मै इस यकीन से सड़कों पे निकल आया हूँ
साथ आए न कोई, हादसे तो आएँगे

एक पल को, एक पागल भीड़ ख़ूनी हो गयी
ज़िन्दगी भर के लिए इक माँग सूनी हो गयी

कल रात ही तो हँसते-मुस्कराते घर गया
जो आज किसी वहशी के हाथों से मर गया

ख़ौफ तेज़ाब की बारिश का करे अमरीका
यहाँ तो मौत बरसती है रोज सड़कों पर

भूल जा खुद अपने कदमों, मंजिलें पाने के ख़्वाब
चाहिए मंज़िल अगर, तो ढूँढ़ ले बैसाखियाँ

बस इसी बात पे, रंजिश है मुझसे दुनिया को
मेरी कोशिश है कि ईमान बचा कर जी लूँ

मुद्दतों के बाद जब खुद से मिले
देर तक चलते रहे, शिकवे-गिले

कुछ गीत…

लोग कहे हैं शिशिर शीत से तन मे हो ठिठुरन
विरह अगिन से लेकिन मेरा दहका जाए तन

बौने-बौने दिन तो जैसे-तैसे कट भी जाते
दिन ढलते ही लेकिन गहरे सन्नाटे घिर आते
इधर शाम से दीप जले है, उधर जले है मन

तुम क्या जानो पीड़ा मुझपे करती क्या-क्या घातें
तुम क्या जानो कैसे कटती है पहाड़-सी राते
कैसे इक-इक पल गिन-गिनकर काट रही जीवन

भूल गए क्या, वो सारी जल्दी आने की बातें
भूल गए क्या, मेरे नैनों की अविरल बरसाते
विदा क्षणों में तुमसे लिपटे वो मेरा क्रन्दन

तुम आ जाओ तो बॉहों का बॉधूँ ऐसा बन्धन
अग-अग कुदन बन जाए, सॉस-सॉस चन्दन
अपना सारा अपनापन, कर दूँ तुमको अर्पन

याद तुम्हारी अक्सर आकर मुझको तड़पाती है
दिल के कोने मे अनजानी टीस उठा जाती है

जब भी कोई लमहा मुझको तनहा पा जाता है
भीतर तक कोई वीराना सा घिर-घिर आता है
पोर-पोर में पीडा जैसे सुई चुभाती है

याद आते है वो लमहे जो साथ-साथ गुजरे थे
जिन लमहो मे जाने कितने इन्द्रधनुष उभरे थे
चलचित्रों की एक कड़ी मन पर छा जाती है

एक याद कोई मीठा-सा चित्र बना जाती है
एक याद मुझको, मुझसे ही बाहर ले आती है
एक याद चुपके से आँखें नम कर जाती है

कभी-कभी तो सब कुछ टूटा-टूटा-सा लगता है
जीने का नाटक भी कितना झूठा-सा लगता हे
मेरी परछाई भी मेरी हँसी उड़ाती हे

सच-सच बतलाना ओ सूरज अपने मन की बात
किस पीड़ा ने डस कर की है तेरे मन पर घात

कल तक सारा मौसम कितना प्यारा-प्यारा था
रूप तेरी किरणो का कितना न्यारा-न्यारा था
करने लगा अचानक क्यूँ अगारों की बरसात
सच-सच बतलाना

मेरी तरह किसी ने, तेरा दिल भी, तोड़ा है
यादो के शोलो मे अपनी जलते छोड़ा है
सौप गया है कठिन विरह की तुझको भी सौगात
सच-सच बतलाना

अपनी पीड़ा लेकिन तुम क्यूँ बाहर लाते हो
दहो स्वय औरो को सग-सग क्यों दहकाते हो
लौटा दो बस्ती को मेरी, कल जैसे दिन-रात
सच सच बतलाना

चाहे हो बाबर की मस्जिद, चाहे मंदिर राम का
जिसकी ख़ातिर झगड़ा हो वो पूजाघर किस काम का

झगड़ा है कुछ तगदिलो का, झगड़ा गलत विचारो का
झगड़ा पडित - मुल्ला का, धर्मो के ठेकेदारो का
झगड़ा हे कुछ तिजोरियों का, सेठो और दलालों का
झगड़ा नफरत फैलाने वालो की गन्दी चालो का
झगड़ा है कुछ ख़ास-ख़ास का झगड़ा नही अवाम का
जिसकी ख़ातिर

झगड़ा है नेतागीरी का, झगड़ा है कुछ वोटो का
झगड़ा चन्दे और चढ़ावे का, झगड़ा है नोटो का
झगड़ा कुर्सी का, टोपी का, कुछ नारों, कुछ झण्डो का
झगड़ा छुटभैयो का, घटिया राजनीति के पण्डो का
झगड़ा हे अपने मतलब का, झगड़ा अपने नाम का
जिसकी ख़ातिर

झगड़ा है ये कुछ अपराधी गलियो के शहजादों का
झगड़ा है ये कुछ शैतानो के शतरजी प्यादो का
जो फसाद होने पर मुस्काते हे अपनी किस्मत पर
जिनकी नजरें बस्ती की सीता सलमा की अस्मत पर
जिनकी नजरो मे घूमा करता है माल हराम का
जिसकी ख़ातिर

असली दुश्मन कौन हमारा, हम सब मिलकर पहचाने
जो नकाब मे रहते उनके असली चेहरो को जाने
जिनकी ख़्वाहिश है, बस्ती मे ख़ूँरेजी का दौर चले
जिनकी कोशिश है हर सीने में नफरत का जहर पले
दौर जिन्हे अखरे बस्ती मे अमन-चैन-आराम का
जिसकी ख़ातिर

इसीलिए सब धर्म बने है, इसीलिए अल्ला-ईश्वर
इसीलिए अवतार हुए है, नबी और है पैगम्बर
इस धरती के रहने वाले अमन - चैन के साथ रहे
प्रेम - प्यार के नगमे गूँजे, प्यार भरे दिन - रात रहे
सिर्फ प्रेम ही है निचोड़ सब धर्मो के पैगाम का
जिसकी ख़ातिर

मॉ की ममता, फूल की खुशबू, बच्चे की मुस्कान का
सिर्फ मोहब्बत ही मजहब है हर सच्चे इसान का

किसी पेड़ के नीचे राही आकर जब सुस्ताता है
पेड नहीं पूछे हे किस मजहब से तेरा नाता है
धूप गुनगुनाहट देती हे, चाहे जिसका ऑगन हो
जो भी प्यासा आ जाता है, पानी प्यास बुझाता है
मिट्टी फसल उगाए पूछे धर्म न किसी किसान का
सिर्फ मोहब्बत ही मजहब हे हर सच्चे इसान का

हमने अक्सर अपनी ही बगिया मे आग लगायी है
अपने ही हाथो से अपनी बस्ती नर्क बनायी है
हमसे तो पशु अच्छे जिनमे जाति-धर्म का फर्क नही
हमने बॅटवारे की हर मुमकिन दीवार उठायी है
अक्सर अक्स उभर आता हे हममे ही शैतान का
सिर्फ मोहब्बत ही मजहब है हर सच्चे इसान का

ये श्रम युग हे जिसमे सबका सग - सग बहे पसीना है
साथ-साथ हॅसना - मुस्काना, सग-सग ऑसू पीना है
एक समस्याये है सबकी, जाति-धर्म चाहे कुछ हो
सब इसान बराबर सबका एक - सा मरना - जीना है
बेमानी हर ढग पुराना इसानी पहचान का
सिर्फ मोहब्बत ही मजहब है हर सच्चे इसान का

मंजिल एक मगर हर राही अलग-अलग रस्ते वाला
एक नशा है एक सुरा है लेकिन अलग-अलग प्याला
एक नूर ते सब जग उपज्या, नानक ने पैगाम दिया
इक धागे में गुँथी हुई ज्यों कई मोतियों की माला
सिर्फ शब्द भर का अतर है खुदा और भगवान का
सिर्फ मोहब्बत ही मजहब है हर सच्चे इसान का

किसी प्रान्त का रहने वाला, या कोई मजहब वाला
कोई भाषा हो, कैसी भी रीति-रिवाजों का ढाला
चाहे जैसा खानपान हो, रहन-सहन, पहनावा हो
जिसको भी इस देश की मिट्टी और हवाओं ने पाला
है ये हिन्दुस्तान उसी का, और वो हिन्दुस्तान का
सिर्फ मोहब्बत ही मजहब है हर सच्चे इसान का

फिर बस्ती में नर्क न उतरे मन का राक्षस उभरे ना
हिंसा भय आतक घृणा के दौर से कोई गुज़रे ना
गोद किसी माँ की न लुटे सिंदूर न लुटे सुहागन का
कुछ लमहों के पागलपन में कोई नशेमन उजड़े ना
व्यर्थ न हो इक खून का कतरा बापू के बलिदान का
सिर्फ मोहब्बत ही मज़हब है हर सच्चे इसान का

रोज नयी चिन्ताएँ लेकर, आता है अख़बार
रोज बढ़े लाशों की गिनती, आहो का अम्बार
ऐसे मे रह-रह कर मन में उठता यही विचार
यही रहा तो आख़िर अपने वतन का क्या होगा
अपने वतन का क्या होगा

कुछ पौधे है तुले स्वय को चमन बताने पर
पूरी की पूरी बगिया मे आग लगाने पर
हर माली को अपने गमले की सुविधा से प्यार
खुशबू रो-रो कर कहती है, चमन का क्या होगा
अपने वतन का क्या होगा

धुआँ-धुआँ आँगन में आँखो में कडुवाहट है
हिलते है स्तभ नीव तक में अकुलाहट है
जगह-जगह से दीवारों पर पड़ने लगी दरार
ईट-ईट डरती है, अपने भवन का क्या होगा
अपने वतन का क्या होगा

जो मन्त्रो की जगह गालियों का उच्चार करें
हिंसा के उपदेश अनोखा धर्म प्रचार करें
आहुतियॉं लोहू की निर्दोषों का गला उतार
इन पुरोहितो के बारूदी हवन का क्या होगा
अपने वतन का क्या होगा

जख़्मी लहूलुहान खड़ी भारत मॉं रोती है
दुखते कन्धों पर अनगिन पीड़ाऍं ढोती है
ममता घुटती है सीने में सोच रही लाचार
मेरे बलिदानी बेटों के सपन का क्या होगा
अपने वतन का क्या होगा

कभी-कभी जीवन मे, ऐसे भी कुछ क्षण आए
कहना चाहा पर होठो से बोल नही फूटे

महज औपचारिकता अक्सर होठों तक आयी
रहा अनकहा जो उसको बस नजर समझ पायी
कभी-कभी तो मौन ढल गया जैसे शब्दो मे
और शब्दकोशो वाले सब शब्द लगे झूठे
'बोल नही फूटे

जिनसे न था ख़ून का नाता रिश्तो का बधन
कितना सारा प्यार दे गए कितना अपनापन
कभी-कभी उन रिश्तो को कुछ नाम न दे पाए
जीवन-भर जिनकी यादो के अक्स नही छूटे
'बोल नही फूटे

□□



लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

जन्म जनवरी, 1955, ग्राम सुजगवाँ, जिला कानपुर

शिक्षा भौतिक विज्ञान में एम० एस-सी०

कविता लिखना स्कूली पढ़ाई के दिनों से शुरू किया किन्तु 1974 से नियमित लेखन। प्रारंभ में व्यंग्य कविता मुख्य विधा रही, फिर 1976 से गज़ल से जुड़े। गज़लों व गीतों के अलावा छन्दमुक्त कविताएँ तथा बाल कविताएँ भी लिखते हैं। रचनाएँ सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

कविताओं के अलावा लघुकथाएँ, व्यंग्य लेख, बाल कहानियाँ तथा विविध विषयों पर अनेक लेख प्रकाशित। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के विविध पाठ्यक्रमों की पाठ्यपुस्तकों के लिए प्रसारण विषयक लेखन। रेडियो प्रसारण हेतु भी विविध विषयों पर अनेक आलेख।

साहित्य के साथ-साथ पत्रकारिता, संगीत, अध्यात्म एवं समाज-सेवा में भी गहन रुचि।

1980 से आकाशवाणी की सेवा में। ग्वालियर बीकानेर तथा अल्मोड़ा केन्द्रों पर कार्य करने के बाद सम्प्रति राष्ट्रीय प्रसारण सेवा, नयी दिल्ली में।